

राधा कहे-कहे ओ कन्हैया
मैं हूँ अकेली-नहीं बैरी कोई सहेली
फिर बजा दे बाँसुरिया ॥२॥

वंशी की धुन तेरी साँवरे
नैना लगे तेरे बाबरे
सूना कदम, कदम की ये दैयाँ.

मैं हूँ अकेली-----

देख तेरे ब्वाले यहाँ आयेंगे
आकर के मुझको सतायेंगे
अब तो जरा सुन, सुन मेरे सखिया

मैं हूँ अकेली-----

मुझ पे नजर लगी गाँव की
रोये पायल मेरी पाँव की
नाचूँगी मैं, डाल गल बैयाँ

मैं हूँ अकेली-----

महिमा "श्रीवाबाश्री" ब्रज धाम की
ओढ़ी चूनर तेरे नाम की
नाचे मेरा मन, बोलेरी कोयलिया

मैं हूँ अकेली-----